



वाराणसी-उ.प्र. । नीलकंठ तिवारी, स्टेट मिनिस्टर फॉर यूथ अफेयर्स, स्पोर्ट्स, लॉ एंड जस्टिस के साथ आध्यात्मिक चर्चा करते हुए ब्र.कु. विपिन तथा अन्य ।



अजमेर-राज. । सेवाकेन्द्र के अवलोकन के दौरान महिला एवं बाल विकास मंत्री अनिता भदेल को आर्ट गैलरी दिखाते हुए एवं ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. अंकिता ।



रोहड़ू-हि.प्र. । राज्य स्तरीय मेले में एस.डी.एम. घनश्याम दास शर्मा को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. रीता ।



राजसमंद-राज. । मूल्यनिष्ठ समाज के निर्माण हेतु अपने विचार व्यक्त करते हुए ब्र.कु. रीता । साथ हैं जिला कलेक्टर प्रेमचन्द जी तथा ब्र.कु. पूनम ।



मण्डी-गोविंदगढ़(पंजाब) । योग दिवस के कार्यक्रम में योगा ट्रेनर पिकी गुप्ता को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. साक्षी ।



वागवेड़ा-झारखण्ड । सरस्वती शिशु मंदिर स्कूल में 'पर्सनैलिटी डेवलपमेंट' कार्यक्रम के दौरान बच्चों को सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. अंजू ।

आसक्ति की समाप्ति से ही शांति की प्राप्ति

गतांक से आगे...

परमात्मा ने चार विकल्प दिए हैं। अगर तुम मेरे में मन को एकाग्र नहीं कर सको तो योगाभ्यास करो। खास बैठक लगा करके अभ्यास करो। जितनी शारीरिक एकाग्रता होगी उतनी मन की एकाग्रता को लाना सहज हो जाएगा। अगर बैठकर भी करना मुश्किल है, तो सेवा करो- यज्ञ सेवा। अर्थात् अनेक आत्माओं को जीवन शुद्ध बनाने की प्रेरणा देना, ये सबसे बड़ी सेवा है। किसी को आत्म उन्नति का मार्ग बताना, ये सबसे बड़ी सेवा है। ये सेवा कर्म करो। उसके लिये समय निकालो। वो भी अगर नहीं कर सके तो मन, बुद्धि को एकाग्र कर आत्म स्थिति में स्थित हो जाओ। ये चार विकल्प बताये हैं परमात्मा ने। इनमें जो भी सहज हो। लेकिन निराकार की ही आराधना, उपासना करने की प्रेरणा दी है। फिर कहा कि अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है। इसलिए ज्ञान को समझो। ज्ञान से ध्यान श्रेष्ठ है और ध्यान से सर्व कर्म फल का त्याग श्रेष्ठ है। जो कर्म करो उसे भूल जाओ। समर्पण कर दो ईश्वर को अर्पण कर दो, ये फल भी तुम्हें अर्पण। जो फल इसका मिलना है वो भी उसको अर्पण कर दो। कर्म फल के त्याग से तत्काल ही शांति प्राप्त हो जाती है। आसक्ति खत्म हो गयी तो मन शांत हो जाता है। फिर भगवान ने प्रिय आत्मा के लक्षण बताए कि जो किसी से द्वेष नहीं करता और सर्व के

प्रति मित्रता भाव रख कृपालू है, वह भगवान को प्रिय है। जो ममत्व बुद्धि और अहंकार रहित है, वह आत्मा भगवान को प्रिय है। जो सदा संतुष्ट, दृढ़ और संयमी है। वह भगवान को अति प्रिय आत्मा है। जो समर्पण बुद्धि है और कर्मयोगी है, वह भगवान को प्रिय है। जो न स्वयं क्रोध करता है और न किसी को क्रोधित करता है वह प्रिय है। जो ईर्ष्या, भय और विषाद इन दुर्गुणों से अलिप्त है, वही भगवान को अति प्रिय है। जो निरपेक्ष, पवित्र और दृढ़ संकल्पधारी है, वह भगवान को अतिप्रिय है। पुरुषार्थ में दृढ़ संकल्पधारी तो बनना ही है, साथ ही पवित्र मन की भावनाओं को भी रखना ही है। जो न अति हर्ष और न शोक, न कभी कोई बात में इच्छा रखता है, वह भगवान को अतिप्रिय है। जो कर्म में शुभ और अशुभ का त्यागी है, वो भगवान को अतिप्रिय है। जो शत्रु, मित्र, मान, अपमान, सुख-दुःख, निंदा-स्तुति में समान एवं क्षमाशील है, वह भगवान को अतिप्रिय है। जो



-ब्र.कु. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

अनासक्त मितभाषी और दूषित संगति से सदैव मुक्त है, वह भगवान को अतिप्रिय है। जो धर्ममय अमृत पथ का श्रद्धा से अनुसरण करते हैं वह भगवान को अतिप्रिय हैं। इतने लक्षण वाले भगवान को अतिप्रिय लगते हैं। इसलिए कर्मयोगी माना इन लक्षणों को जितना हो सके, उतना अपने जीवन में विकसित करते जाएं। अपने आपको भगवान के प्रिय बनाते चल। इस प्रकार बारहवें अध्याय में परमात्मा ने अपने प्रिय अर्जुन के प्रश्नों के उत्तर दिये। साकार भक्ति श्रेष्ठ से निराकार भक्ति श्रेष्ठ है। फिर भगवान की प्रिय आत्मा के लक्षण बताए हैं। उन लक्षणों के आधार पर कैसे हर संघर्ष में विजयी बनना है। ये प्रेरणा दी है। अब अपने मन को बाह्य सभी बातों से समेट लें। योगाभ्यास के लिए अपने मन को शुद्ध संकल्प देते जायेंगे, दृढ़तापूर्वक बैठेंगे, जितनी शारीरिक एकाग्रता को हम बना सकते हैं, उतनी मन की एकाग्रता को ले आना सहज और स्वाभाविक होगा। इसलिए दृढ़ता पूर्वक अभ्यास करें। साथ ही साथ मन को परमात्मा की स्मृति में ले चलते हैं। अपने मन को शुद्ध संकल्प देते चलें। अंतर्चक्षु, धीरे-धीरे खुलता जा रहा है। परमात्मा के दिव्य स्वरूप को हम सभी ने जान लिया समझ लिया है। अब उस अंतर्चक्षु के सामने परमात्मा के दिव्य स्वरूप पर, हम अपने मन और बुद्धि को एकाग्र करेंगे।

- क्रमशः

ख्यालों के आईने में...

मन और मकान को वक्त वक्त पर साफ करना बहुत ज़रूरी है, क्योंकि मकान में बेमतलब सामान और मन में बेमतलब गलतफहमियाँ भर जाती हैं।

यदि हम गुलाब की तरह खिलना चाहते हैं, तो काँटों के साथ तालमेल की कला सीखनी होगी।

तालाब एक ही है, उसी तालाब में हंस मोती चुनता है और बगुला मछली। सोच-सोच का फर्क होता है। आपकी सोच ही आपको बड़ा बनाती है।।

आवश्यक सूचना

एस.एल.एम. ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज/ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग के लिए 4 बी.के. किचन असिस्टेंट की अतिशीघ्र आवश्यकता है।
योग्यता : हाई स्कूल
कार्यानुभव : कम से कम 2 वर्ष का कुकिंग एक्सपीरियंस

संपर्क करें : एस.एल.एम. ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज/ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग, शिवमणि होम के पास, तलहटी, आबू रोड
मो. : 8432403244/94141413717
ई.मेल : nntagrwal@gmail.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

TATA SKY	1065	678	GTPL DEN
Vision	497	640	SIT
Free to Air	ABS	FREE DTH	Contact
KU Band	LNH Freq. - 99750/10600	LNH Freq. - 99750/10600	LNH Freq. - 99750/10600
with MPEG	Trans Freq. - 12327	Trans Freq. - 12327	Trans Freq. - 12327
2K/4K Receiver	Polarization - Horizontal	Polarization - Horizontal	Polarization - Horizontal
	Symbol - 84000	Symbol - 84000	Symbol - 84000
	22K - On	22K - On	22K - On
	Satellite - ABS-2; 75° E	Satellite - ABS-2; 75° E	Satellite - ABS-2; 75° E
	Address: Sector 12, Badli	Address: Sector 12, Badli	Address: Sector 12, Badli
	+91 9624251213	+91 9624251213	+91 9624251213
	+91 8104777511	+91 8104777511	+91 8104777511
	info@psm.in	info@psm.in	info@psm.in
	www.psm.in	www.psm.in	www.psm.in

सूचना : अगस्त 2017 से ओमशान्ति मीडिया पत्रिका की सदस्यता शुल्क में मामूली सी बढ़ोतरी की गई है जो कि वार्षिक शुल्क 200 और तीन वर्ष का 600 किया गया है।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय- ओमशान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- omshantimedia@bkivv.org, mediabkm@gmail.com, Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।